डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प

हिन्दी विषय में
पीएच. डी. उपाधि हेतु
कला एवम् मानविकी महाविद्यालय,
आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ
को प्रस्तुत प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा
वर्ष 2021-22

शोध निर्देशक
शोधार्थी डॉ. पूनम शर्मा
सपना दत्ता असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
परास्नातक हिन्दी एवं भूगोल
कला एवम् मानविकी महाविद्यालय,
आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

शोध केन्द्र

कला एवम् मानविकी महाविद्यालय,
आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रारूप

1. शोधार्थी का नाम हिन्दी : सपना दत्ता

2. In English : Sapna Dutta

3. शोध कार्य का शीर्षक हिन्दी : डॉ. रामसनेही लाल शर्मा ‘यायावर’ का गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प

4. शोध कार्य का स्थल
   (क) संस्था/विभाग का नाम जहाँ कार्य किया जा रहा है : आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ उत्तर प्रदेश
   (ख) शोध की भौगोलिक स्थिति : लागू नहीं

5. प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय : संलग्नक 1

6. प्रस्तावित शोध कार्य के मुख्य उद्देश्य : संलग्नक 2

7. प्रस्तावित शोध कार्य में प्रयोगधर्मिता : संलग्नक 3

8. शोध संदर्भित साहित्य की वर्तमान स्थिति : संलग्नक 4

9. शोध प्रविधि/पद्धति : संलग्नक 5

10. प्रस्तावित अध्याय योजना : संलग्नक 6

11. प्रस्तुत शोध कार्य का अध्यायवार विवरण : संलग्नक 7

12.	संदर्भ ग्रन्थ सूची	:	संलग्नक 8
13.	सहायक स्त्रोत	:	संलग्नक 9

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय

ज्ञान बढ़े गुरु की कृपा , लिखूँ सत्य धर माथ ।
माथ नम्रता मन बसे , शील मधुरता साथ ।।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व या उपयोगिता का प्रारम्भ मैं उपरोक्त स्वरचित **सिंहावलोकनी दोहे** के साथ गुरुजनों को नमन करते हुए करती हूँ, इस बात की शुरुआत के साथ कि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य के संवेदना और शिल्प को ही शोध का विषय क्यों चुना गया ? प्रारंभ करती हूं वर्ष 2017 से जब इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, (इग्नू) रोहिणी, दिल्ली में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के आयोजक थे **पद्म श्री डॉ. श्याम सिंह 'शशि' जी** तथा कार्यक्रम संचालन का भार मेरे कंधों पर था और उस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे आदरणीय डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी । यह मेरा सौभाग्य था कि आज उनसे प्रथम बार मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था । अभी तक उनके नवगीतों, दोहों, मुक्तकों को पढ़ा भर था । उसके पश्चात नियति ने अनेकों बार अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों में आदरणीय 'यायावर' जी से मिलने का सौभाग्य प्रदान किया । काव्य के क्षेत्र में रामनाथ साहू 'ननकी' जी मेरे प्रथम काव्य गुरु हैं, तो डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी मेरी काव्य की पराकाष्ठा का आधार हैं । डॉ.'यायावर' जी का कृतित्व व व्यक्तित्व दोनों ही मधु के समान अत्यंत सरल एवं सहज हैं, जिसको जिह्वा पर रखते ही रस, गुण और गन्ध तीनों की अनुभूति एक साथ रसोगुणानन्द से भी ऊपर जाकर ब्रह्मानन्द की अनुभूति करवाती है । इनके व्यक्तित्व का परिचय ही इनके वृहद् विस्तारित कृतित्व का परिचय करवाता है । अनेकानेक उपलब्धियाँ इनके नाम संग्रहित हैं । जिसका अति सूक्ष्म परिचय इस प्रकार है ।

साहित्य के क्षेत्र में इनका योगदान-

1. लगभग 40 से अधिक साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

2. सम्पादित कृतियों की संख्या 12 से अधिक है।

3. 120 स्तरीय कृतियों में लेखन सहभागिता की है।

4. 13 से अधिक विशिष्ट उपलब्धियाँ आपके नाम संग्रहित हैं।

5. अनेकानेक मानद उपाधियाँ पुरस्कार सम्मान जिनमें साहित्य भूषण वर्ष 2018 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा, साहित्य वाचस्पति, गीत गंधर्व, काव्य महारथी, सनातन गौरव, भारती सेवा भूषण, काव्य श्री, काव्य गौरव, साहित्य श्री आदि सम्मानों की संख्या 52 से भी अधिक है।

इसके साथ ही आप काव्य जगत में नवगीतकार के रूप में विख्यात हैं परन्तु इस बात को भी पूर्णतया नकारा नहीं जा सकता कि नवगीत के परे भी साहित्य के क्षेत्र में आपकी एक वृहद् दुनिया है वह दुनिया है गीतों से इतर काव्य की जिसमें बहुत सारे रंगों के पुष्प विविध प्रजातियों के साथ काव्य वाटिका में पुष्पित व गन्धायमान होते हैं और संपूर्ण काव्य वाटिका पल प्रतिपल सुहासित ही रहती है। चाहे वह सवैया छन्द हो या फिर दोहा कुंडलिया जैसे पारम्परिक छन्द। विशेष बात यह है कि पारम्परिक छन्दों में भी नवीन प्रयोग आपकी रचनाओं में परिलक्षित होते हैं यथा- दोहे तथा कुंडलियों का सृजन मूलतः नीति, आदर्श, धार्मिक तथा अध्यात्मिक भाव के लिए किया जाता है परन्तु यहाँ पर परम्परागत छन्दों को नवीन कलेवर में प्रस्तुत किया गया है। यह नवीन कलेवर है समाजिकता का, समाजिक विरूपता का, राष्ट्र का, राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं का यथा -

व्यथा कथा हर रोज यह, पढ़ता है परिवार।
छत से ऊँची हो गई, आँगन की दीवार।।

प्रथमतया वर्णित 15 गुरु व 8 लघु से सुसज्जित **नर दोहा** में जहाँ राष्ट्र की व्यथा कथा को अखबारों के माध्यम से प्रतिदिन पढ़ा जाता है तथा आँगन की दीवार का छत से भी ऊँचा हो जाना मात्र अतिशयोक्ति अलंकार को ही प्रतिपादित नहीं करता वरन् कवि हृदय का विह्वल होकर राष्ट्र की एकता अखंडता और संप्रभुता के प्रति संवेदनशीलता को भी साक्षात् प्रकट करता है।

अंतर तम में बस गया, सन्नाटे का शोर।
केवल चित्रों में दिखे, आज नाचता मोर।।

उपरोक्त वर्णित 17 गुरु व 14 लघु मात्राओं से सजा हुआ **मर्कट दोहा** में अन्तस के अन्धकार में सन्नाटे के शोर का विलीन होना, कवि हृदय के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष के जन-गण के मन के भावों को बताता है, जहाँ कविवर राष्ट्रीय पक्षी मोर रूपी राष्ट्रीयता की पावन भावना को केवल कागजों तक ही सीमित बताकर राष्ट्र को जागृत करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं वहीं भारतवर्ष के गौरवशाली इतिहास के वर्णन से भी राष्ट्रप्रेम को जगाने का कोई भी प्रयास छोड़ा नहीं जाता। कभी वीर शिवाजी महाराज तो कभी स्वामी विवेकानंद जी के गौरवशाली जीवनियों को काव्य में सजा कर प्रस्तुत किया गया है।

कर्म लेखनी शील मसि, काल पत्र छवि मान।
लिखा शिवा ने दीप्तिमय, भारत का जय गान।।

इस प्रकार के अनेकानेक प्रयोग निश्चित रूप से अपनी नवीनता और तेजस्विता के साथ मुखरित होते हैं साथ ही एक नवीन आकर्षण भी उत्पन्न करते हैं। निःसंदेह कहीं न कहीं यही आकर्षण मुझे भी आकर्षित करता है कि गीतेतर काव्य में संवेदना एवम् शिल्प पर आधारित यह शोध आने वाले समय के लिए अपनी विशिष्टता, वैधता के साथ पराकाष्ठा पर पहुँच कर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित करेगा।

प्रस्तावित शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य

शोध प्रक्रिया को संचालित करने का सम्पूर्ण दारोमदार प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्य में ही निहित होता है । किसी भी शोध ग्रन्थ का उद्देश्य पूर्व लक्षित एवम् निर्धारित होता है जो उस शोध प्रक्रिया को सुचारू रूप से नियंत्रित करके उसे अपनी पूर्णता प्रदान करने और शोधार्थी की जिजीविषा और कर्मठता को सदैव जाग्रत रखता है । प्रस्तावित शोध कार्य **डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प** के उद्देश्य को जानने से पूर्व यह भी जानना आवश्यक है कि अभी तक डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के नवगीतों पर बहुत कार्य हो चुका है, नवगीतों की बात की जाए तो नवगीत अपने आप में विशिष्ट शैली, भाव संयोजन की विशिष्टता लिए हुए सीधे आम जनमानस के हृदय को छूते हैं । नवगीत जन-जन की व्यथा को व्यक्त करते हैं, परन्तु उनमें सदैव कोई न कोई प्रश्न चलता रहता है यह प्रश्न है शोषण के सूचक का, वहाँ पर सभी शोषित ही दिखाई देते हैं । उदाहरण के रूप में डॉ. कुंवर बेचैन जी का एक नवगीत **भीतर सांकल बाहर सांकल** पुस्तक से प्रस्तुत है ।

जिसे बनाया वृद्ध पिता के श्रम जल ने,
दादी की हँसली ने, माँ की पायल ने,
उस कच्चे घर की दीवारों पर,
मेरी टाई टंगने से कतराती है,
पत्नी के कर से साड़ी गिर जाती है ।

या फिर 'यायावर' की पुस्तक **मन पलाशवन और दहकती संध्या** का उदाहरण देखते हैं।

नागफनी हो गई हवाएँ मौसम बेतरतीब,
धूप चुभोती पिन बाजू में अपना यही नसीब,
तुलसी चौरे पर/ छिपकलियाँ काट रहीं डंठल,
मानसरोवर के हिस्से में /सूखे हुए कमल,
कब तक इन घायल कंधों पर / ढोते रहे सलीब।

इस प्रकार नवगीत रसात्मक ना होकर संवेगात्मक हो चुके हैं । किसी दार्शनिक परिणति से वंचित हो चुके हैं परन्तु नवगीतों का खुरदरापन संवेदनात्मक

रूप से बौद्धिकता के साथ तराशा हुआ है। इस बौद्धिकता ने शत प्रतिशत नवगीत को समृद्ध किया है परन्तु प्रत्येक दिशा और प्रत्येक क्षेत्र में यह नवगीत प्रश्न ही प्रश्न खड़े करते दिखाई देते हैं। यह सभी प्रश्न एक छटपटाहट और एक व्यथा को जन्म देते हैं।

ऐसे में प्रस्तावित शोध कार्य **डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प** सर्वथा नवीन विषय है। अभी तक उक्त विषय पर कोई भी कार्य नहीं हुआ है।
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का गीतेतर काव्य अत्यंत वृहद् एवम विशिष्ट है। छन्द बद्ध एवम छन्द मुक्त रचनाएँ अपने नवीन कलरव में मुखरित हैं। प्रस्तावित शोध कार्य डॉ. राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' का गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प के उद्देश्य के प्रमुख बिन्दु संक्षेप में निम्न हैं-

1. समकालीन काव्य के गीतेतर परिदृश्य पर विहंगम दृष्टिपात करना।
2. समकालीन गीतेतर काव्य के संवेदना के व्यापक आकाश को नापना।
3. गीतेतर काव्य के विविध रूपों दोहा, कुंडलिया, जनक छन्द, सजल, गजल, हाइकु, कवित्त, सवैया, मुक्तक तथा छन्द मुक्त कविता के स्वरूप को समझना और समझाना।
4. समकालीन गीतेतर काव्य की भाषा के स्वरूप को समझना और उस स्वरूप में आये परिवर्तनों पर प्रकाश डालना।
5. डॉ.'यायावर' के गीतेतर काव्य के संवेदना संसार व शिल्प में आयी नवीनता को रेखांकित करना।
6. डॉ.'यायावर' के शिल्प विधान को परखना।

प्रस्तावित शोध कार्य में प्रयोगधर्मिता

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प ही क्यों विषय लिया जाए ? इस प्रश्न के उत्तर में ही प्रस्तावित शोध कार्य की प्रयोगधर्मिता व्याप्त है । डॉ.'यायावर' के गीतेतर काव्य की बात करें, तो यह गीतों से इतर काव्य बहुत सारी विविधताओं से भरा हुआ है । काव्य की यह शृंखला जिसमें अनुभूतिक मिथकीय प्रयोग, कारगर प्रतीक विधान, गेयता की बहुमुखी व्यवस्था, बहुआयामी प्रकृति चित्रण, प्रणय बिम्बों की दार्शनिकता, नवबोध, सामाजिक चेतना, उत्कृष्ट समानान्तरता एवं शब्द चयन में भाव से समतुल्यता का सटीक संवहन ऐसे गुण हैं जो गीतेतर काव्य की समस्त रचनाओं की आधार भूमि पर बहुरंगी पुष्प उगाते हैं । यह सभी सुवासित पुष्प हौले-हौले से मन के गलियारों के प्रत्येक कोने को गन्धायमान करते हुए जीवन दर्शन की व्यापकता को रोपित करते हैं । गीतकार और गीत समीक्षक होने के अतिरिक्त वे बहुमुखी प्रतिभा के बहुआयामी रचनाकार भी हैं, इस दिशा में कम लोगों का ही ध्यान गया है कि उनके-

1. सात दोहा संग्रह
2. दो मुक्तक संग्रह
3. एक हाइकु
4. एक जनक त्रिंशतिका
5. एक सवैया कवित्त
6. एक गज़ल
7. दो कुंडलिया संग्रह
8. दो सजल संग्रह भी प्रकाशित है ।

शोध संदर्भित साहित्य की वर्तमान स्थिति

डॉ. 'यायावर' के साहित्य पर अनेक शोध कार्य भी संपन्न हुए हैं। जिनका विवरण निम्न है-

1. **डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**, बलभद्र सिंह, डॉ. अनिल कुमार सिंह गहलौत, एम. ए. 2002, डॉ. बी. आर. ए. वि. वि. आगरा।

2. **मेले में यायावर में बिम्ब और प्रतीक**, कविता रायजादा, डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर, एम. फ़िल., 2007, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र।

3. **डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' की साहित्य साधना- संवेदना और शिल्प**, रमेश चन्द्र त्रिपाठी, डॉ. अजीत कुमार सारस्वत, पीएच. डी., 2010, डॉ. रा. म. लो. अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद।

4. **समकालीन गीति काव्य को डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का प्रदेय**, प्रतिभा त्रिपाठी, डॉ. अजीत कुमार सारस्वत, पीएच. डी., 2015, डॉ. रा. म. लो. अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद।

5. **डॉ. ओमप्रकाश सिंह एवं डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के नवगीतों का तुलनात्मक अध्ययन**, कामना त्रिपाठी, डॉ. अजीत कुमार सारस्वत, पीएच. डी., 2016, डॉ. रा. म. लो. अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद।

यदि देखा जाए तो अभी तक डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी के गीतों, नवगीतों तथा संपूर्ण काव्य पर बहुत कार्य हो चुका है; परंतु गीतेतर काव्य अछूता है। इस पर अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है।

शोध प्रविधि/पद्धति

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए डॉ. रामसनेही लाल शर्मा ‘यायावर’ जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित प्रथम अध्याय में **व्यक्ति एवं इतिहास अध्ययन पद्धति** के आधार पर शोध सामग्री का संगठन कर विवेचन किया जाएगा । स्वाध्याय प्रवृत्ति आधारित मूल पुस्तकों की अवधारणा और उनके स्वरूप को परिभाषित कर व्याख्यायित किया जाएगा । शास्त्रीय विधि पर विचार कर नीति, भक्ति, धर्म, प्रेम जैसे विषय आधारित रचनाओं का वैचारिक अध्ययन कर स्वाध्याय प्रमाणन और संबंधित अध्याय में उपयोग के आधार पर **विशुद्ध मूल शोध एवं प्रायोगिक प्रयुक्त या क्रियाशील शोध प्रक्रिया** का प्रयोग भी किया जाएगा । **आचार्य विनय मोहन शर्मा** के अनुसार **शोध तथ्यों की खोज ही नहीं उनकी तर्क सम्मत व्याख्या है** के आधार पर डॉ.‘यायावर’ की रचनाओं में समस्त बिन्दुओं पर तर्क सम्मत व्याख्या की जाएगी । इसके अतिरिक्त शोध कार्य के दौरान निम्न प्रक्रिया भी अपनाई जाएगी ।

1. शोध विषय हेतु डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के काव्य ग्रन्थों का संकलन किया जाएगा ।

2. शोध विषय से संबंधित संदर्भ पुस्तकों एवं ग्रन्थों से आवश्यक सामग्री का संकलन किया जाएगा ।

3. शोध विषय से संबंधित पूर्ववर्ती शोधकर्ताओं के शोध प्रबन्धों से भी सूचनाएं एकत्र की जाएगी ।

4. इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबसाइटों से भी तथ्यपरक सूचनाओं का संकलन किया जाएगा ।

4. पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न लेखों साक्षात्कारों एवं पत्राचार के द्वारा आवश्यक सामग्री का एकत्रीकरण भी किया जाएगा ।

इसके साथ ही चूँकि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा ‘यायावर’ की रचनाओं में ऐतिहासिकता का पुट भी मिलता है, विशेषकर दोहे व कुंडलिया में अतएव उनकी विवेचना हेतु **ऐतिहासिक शोध विधि** का प्रयोग किया जाएगा । आपकी अनेकों

पुस्तकों में सामाजिक आर्थिक राजनैतिक समस्याओं पर विविध छन्दों में व छन्द मुक्त रचनाएँ लिखी गई हैं, इस सम्बन्ध में **वर्णनात्मक शोध विधि** का प्रयोग किया जाएगा। इसके साथ ही चूँकि डॉ. 'यायावर' की गीतेतर रचनाएँ एक दशक से अधिक कालक्रम के मध्य में लिखी गई हैं। वर्ष 2000 से अभी तक इस लम्बे अन्तराल में प्रारम्भिक रचनाओं एवं वर्तमान की रचनाओं के मध्य अध्ययन में **विकासात्मक अध्ययन विधि** का भी प्रयोग किया जाएगा। डॉ.'यायावर' की रचनाओं में शिल्प की दृष्टि से नवीनता है और विषय भी नवल हैं अतः अध्यायवार रूप से ग्रामीण, शहरी जीवन की अवधारणा एवं उसके स्वरूप को परिभाषित कर विवेचन भी किया जाएगा। इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर **वर्णनात्मक शोध** विधि द्वारा वर्तमान परिस्थितियों, विश्वासों, विचारधाराओं व अभिवृत्तियों का वर्णन एवं विश्लेषण किया जाएगा। **वर्णनात्मक शोध** का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है अतः डॉ.'यायावर' की कृतियों में वर्णनात्मक समस्या से सम्बन्धित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं किया जाएगा वरन् समस्या से सम्बन्धित विभिन्न स्वरूप में आपसी सम्बन्ध भी खोजने का प्रयास किया जाएगा तथा शास्त्रीय विधि व शिल्प की दृष्टि से नवीनतम बोध को परिभाषित किया जाएगा।

प्रस्तावित अध्याय योजना

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प का प्रारूप

प्रस्तावना- समकालीन गीतेतर काव्य और डॉ. 'यायावर'

प्रथम प्रकरण-डॉ. 'यायावर' व्यक्तित्व और कृतित्व

1. जीवन
2. शिक्षा
3. परिवार
4. प्रवृत्ति एवं अभिरूचि
5. कर्म क्षेत्र
6. साहित्य सृजन की प्रेरणा
7. साहित्य साधना

द्वितीय प्रकरण- डॉ. 'यायावर' का गीतेतर काव्य

1. डॉ. 'यायावर' का गीतेतर काव्य- एक विहंगावलोकन
2. मुक्तक/चतुष्पदी संग्रह
3. दोहा संग्रह
4. कुंडलिया संग्रह
5. सजल संग्रह
6. जनक छन्द संग्रह
7. हाइकु संग्रह

8. सवैया एवं कवित्त संग्रह

9. अन्य

तृतीय प्रकरण- डॉ. 'यायावर' के गीतेतर काव्य का संवेदना संसार

1. काव्य और संवदेना का अन्तः सम्बन्ध

2. डॉ. 'यायावर' के काव्य में संवेदना

3. संवेदना वैविध्य

क- प्रेम **ख**- शृंगार **ग-** प्रकृति **घ-** राष्ट्र प्रेम **ङ-** संस्कृति **च-** युगबोध **छ-** आध्यात्मिक चेतना **ज-** अतीत गौरव
झ- नारी चेतना **ञ-** मूल्य चेतना एवं मूल्य विघटन **ट-** अन्य संवेदनायें

चतुर्थ प्रकरण- काव्य शिल्प और उसका स्वरूप

1. शिल्प- अर्थ और स्वरूप

2. संवेदना और शिल्प का अन्तः सम्बन्ध

3. शिल्प के तत्व

क- भाषा **ख-** छन्द **ग-** अलंकार **घ-** बिम्ब **ङ-** प्रतीक **च-** मिथक **छ-** अन्य

पंचम प्रकरण- डॉ. 'यायावर' के गीतेतर काव्य में भाषा और छन्द

1. गीतेतर काव्य की भाषा

2. भाषा वैविध्य व आयाम

क- शब्द संगठन ख- शब्द शक्तियाँ ग- लोकोक्तियाँ व मुहावरे घ- उक्ति वैचित्र्य

3. गीतेतर काव्य में छन्द

क- दोहा **ख-** जनक **ग-** कुंडलिया **घ-** हाइकु **ङ-** सवैया **च-** कवित्त

4. मुक्तक/चतुष्पदी का छन्द वैविध्य
5. सजल का छन्द विधान
6. हाइकु का छन्द विधान

षष्ठ प्रकरण- गीतेतर काव्य में शिल्प के अन्य तत्व

1. अलंकार
2. बिम्ब विधान
3. प्रतीक योजना
4. अप्रस्तुत योजना
5. अन्य तत्व

उपसंहार- शोध से प्राप्त निष्कर्ष

परिशिष्ट

साक्षात्कार- डॉ. यायावर और शोधार्थिनी आमने-सामने

अध्यायवार विवरण

प्रस्तावना- समकालीन गीतेतर काव्य और डॉ. 'यायावर'

प्रथम प्रकरण- डॉ. 'यायावर' व्यक्तित्व और कृतित्व
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही विलक्षण हैं। आपके व्यक्तित्व की मधु जैसी सरलता, सहजता, उच्चादर्शों की परम्परा आपके कृतित्व में भी दृष्टिगोचर होती है। शोध ग्रन्थ के इस प्रथम प्रकरण में आपके जीवन, शिक्षा, परिवार, प्रवृत्ति एवं अभिरूचि, कर्मक्षेत्र, साहित्य सृजन की प्रेरणा, साहित्य साधना, साहित्य के क्षेत्र में प्राप्त पुरस्कारों, 'यायावर' उपनाम से प्रेरित विभिन्न देशों की यात्राओं का आपकी रचनाओं पर प्रभाव की विस्तृत विवेचना की जाएगी।

द्वितीय प्रकरण- डॉ. 'यायावर' का गीतेतर काव्य

1. डॉ. 'यायावर' का गीतेतर काव्य- एक विहंगावलोकन
गीतेतर काव्य में दोहा, जनक, कुंडलियों जैसे पारम्परिक छन्द होकर भी 'यायावर' जी के विषय नवीनतम है तथा उसमें नवबोध है। **यायावर की कलम** शीर्षक से **डॉ. सुंदर वीर सिंह** लिखते हैं-

सर्वहितैषी सर्वप्रिय, है भूषण साहित्य।
यायावर की लेखनी, कविता का आदित्य ।।

2. मुक्तक/चतुष्पदी संग्रह-
भारतीय काव्यशास्त्र में पूर्वापर सम्बन्ध से मुक्त, प्रसंग निरपेक्ष स्वतंत्र काव्य को मुक्तक कहा गया है। इस दृष्टि से महाकाव्य और खंडकाव्य को छोड़कर सभी काव्य विधाएँ मुक्तक के अंतर्गत समाहित हो जायेंगीं परन्तु आधुनिक युग में उक्त शब्द का प्रयोग चतुष्पदी के अर्थ में होने लगा है। जो उर्दू की रूबाई से मिलता-जुलता प्रतीत होता है। दोनों में अन्तर यह है कि रुबाई 22-22 मात्रा के विधान की विधा है जबकि मुक्तक 8 मात्रा से लेकर 40 या उससे भी अधिक मात्रा में लिखा जा सकता है अर्थात दंडक तक जा सकता है। इसकी संरचना में प्रथम तीन पंक्तियों में भूमिका बनाई जाती है और अन्तिम पंक्ति में अर्थ का चमत्कारिक विस्फोट होता है। डॉ. 'यायावर' के दो मुक्तक संग्रह **बाँसुरी-बाँसुरी** और पाँखुरी-पाँखुरी प्रकाशित हो चुके हैं। दोनों ही संग्रहों के सभी मुक्तक अत्यन्त प्रभावशाली

और अर्थ की दृष्टि से परिपूर्ण हैं। यही नहीं उन्होंने अपने मुक्तकों में प्रतीकों और मिथकों को भी बड़ी सार्थकता के साथ अभिव्यक्ति का उपादान बनाया है जैसे-

सदियों नहीं जिंदगी कुछ ही क्षण होती है।
अगर बुद्धि दूषित हो तो रावण होती है।
रत्ना जब गढ़ देती कोई दिव्य प्रेरणा,
तब तुलसी के हाथों रामायण होती है।।

डॉ. 'यायावर' के मुक्तकों की विशेषता यह है कि वह अपने लघु आकार में भी बहुत कुछ सार्थक और उद्देश्य पूर्ण वक्रोक्तिमयी भाषा में कह जाते हैं।

3. दोहा संग्रह-

नवगीत के पश्चात उनके सर्वाधिक संग्रह दोहा छन्द के ही हैं। उनके दोहे विविध विषयों पर हैं। किसी एक संवेदना पर वे असंख्य दोहे सरलता से लिख सकते हैं। मन को उन्मत्त करने वाला ऋतुराज बसन्त, अधरों की मुस्कान छीन लेने वाला महानगर, लोकतन्त्र के नाम लिखने वाली बन्दूकें, पर्यावरण और मानवता के लिए अभिशाप बना हुआ प्रदूषण, बचपन बेचकर चाकू खरीदते हुए बच्चे, प्रतीक्षा करती हुई व्याकुल आँखें, राजाओं द्वारा अपने पूर्वजों की पालकी ढोने का गर्व पालने वाला कवि, पूरे न होने वाले उदास सपने, चालबाज़ मौसम जैसे अनेक विषयों की संवेदना, तरलता और भाषा की सामासिकता में ढल कर डॉ. 'यायावर' के दोहों का आकार लेकर अवतरित हुई है। आधुनिक जीवन की विद्रूपता, मानव की हिंसक वृत्ति, चारित्रिक पतन और कृत्रिमता जैसे साकार होकर बिम्बित होती जाती है। लोक जीवन और लोक संस्कृति के प्रति डॉ. ‘यायावर’ का गहरा अनुराग है उन्हें लगता है कि पगडंडियों की सहजता, लोकगीतों की मिठास, पनघट का चुलबुलापन, अलावों की सामाजिकता, संस्कारों की पावनता और आपसी संबंधों की मधुरता को महानगरों ने बहुत खूबसूरती के साथ चुरा लिया है। इसीलिए तो वह कहते हैं-

घूंघट मेहंदी कंठ स्वर, करुणा मोह उछाह।
महानगर में बिक गए, दर्द प्रेम या चाह।।
खेत गैल खलिहान वन, उपवन और सहेट।
निगल गया सबको यहाँ, महानगर का पेट।।

4. कुंडलिया संग्रह-

कुंडलिया में एक दोहा और रोला को जोड़कर 6 पंक्तियाँ लिखी जाती हैं। प्रथम शब्द या शब्द समूह से ही छन्द का समापन किया जाता है। डॉ. 'यायावर' जी ने विपुल मात्रा में कुंडलियों का सृजन किया है। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने कुंडलिया जैसे पारम्परिक छन्द में भी आधुनिक जीवन की विसंगतियों, आस्था और मानवीय पीड़ा जैसे विषयों को भी कुंडलिया के कलेवर में बांधा है। उदाहरण के लिए-

महँगाई सौ दोपहर, सदाचार सी प्रात।
घोटालों से दिन हुए, नीति वाक्य सी रात।।
नीति वाक्य सी रात, भूमि सब लगती बंध्या।
नेताओं के शिथिल, आचरण जैसी संध्या।।
नई बहू खा आम, कर रही है उबकाई।
बढ़ी सास की खुशी, बढ़ रही ज्यों महंगाई।।

5. सजल संग्रह-

वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य में एक नई विधा के रूप में सजल ने अपना वर्चस्व स्थापित किया है। यह विधा उर्दू की एक चिरपरिचित काव्य विधा गज़ल के काफी हद तक समीप है। जानकारों की मानें तो इस विधा का विकास भी दोहा से ही हुआ है। सजल विधान में दोहे की भाँति ही कम शब्दों में अधिक अर्थ देने की क्षमता विद्यमान है। सजल विधा के प्रादुर्भाव के दिनों से ही डॉ. 'यायावर' का जुड़ाव रहा है। जिस प्रकार जब किसी नवीन कृति का प्रादुर्भाव होता है और समय के साथ उसके परिष्करण में परिवर्तन तथा परिमार्जन की स्थितियाँ समाहित होती हैं। उसी प्रकार इन सभी स्थितियों से सजल विधा भी गुजरी है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि सजल संग्रह के रूप में जो पुस्तक सर्वप्रथम प्रकाशित हुई है वह डॉ. 'यायावर' की कृति **तृषा का आचमन** है। इस पुस्तक में राष्ट्र चेतना, आध्यात्मिक स्वर तथा मानवीय चेतना के स्वरों को बहुत ही सुंदरता व कलात्मकता के साथ पिरोया गया है। उदाहरणार्थ एक सजल का आदिक और एक पदिक द्रष्टव्य है-

जीत मनोहर हार मनोहर।
सुख दुख का विस्तार मनोहर।
स्वाभिमान खोकर लगता है,

राजा का दरबार मनोहर ।।

सजल ने हिन्दी के उन सभी रचनाकारों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है । जो उर्दू की गज़ल की बहरों और उनके शास्त्र से परिचित नहीं हैं । यह विशुद्ध हिंदी की विधा है इसे स्थापित करने में डॉ. 'यायावर' का महत्वपूर्ण योगदान है ।

6. जनक छन्द संग्रह-

जनक छन्द दोहा के विषम चरणों की तीन आवृत्तियों से बना यह छंद कुल 39 मात्राओं का छन्द है । इसमें साधारणतया प्रथम और तृतीय पंक्ति में तुकांत लगाए जाते हैं । डॉ.'यायावर' ने जनक छन्दों की भी रचना की है । उनका एक संग्रह **जनक: नए युग का जनक** इस तथ्य का प्रमाण है । एक जनक छन्द दृष्टव्य है-

संयम कहां स्वतंत्र है (4,4,3,2)
घूम रहा ऋतुराज ले (3,3,2,3,2)
सम्मोहन के मंत्र हैं । (4,4,3,2)

7. हाइकु संग्रह-

डॉ. राम सनेही लाल 'यायावर' जी व्यंग, वक्रोक्ति, तुकान्त, विधान और सार्थक विषय के साथ अपनी लेखनी से रचते हैं । उनका दूसरा योगदान यह भी है कि उन्होंने हाइकुओं की रचना में मुक्तकों और गीतों की भी रचना की है । एक मुक्तक प्रस्तुत है-

ग्रीष्म जलाता/सुख देता है यह/ सावन घन ।
सुख में हँसी / अश्रु हर दुख में /पाता है तन ।।
मिलन करें/ उत्साहित मन को/ पीड़ा हर के ।
किंतु विरह/ पानी-पानी करता/ सबका मन ।।

हिंदी में जापानी छन्द हाइकु की स्वीकृति और लोकप्रियता बढ़ने पर हिंदी कवियों के मन में त्रिपदी छन्दों की ओर ध्यान गया है । संस्कृत में त्रिपदिक छन्द है । पंजाबी में माहिया भी त्रिपदिक है, परंतु हिंदी में इसका अभाव है । ऐसी स्थिति में हिंदी कवियों का ध्यान दोहे की ओर ही गया और दोहे के पहले तीसरे या दूसरे चौथे चरणों की तीन आवृत्तियों से कई छन्दों का निर्माण किया गया । हाइकु जापान की अत्यंत सूक्ष्म आकार की कविता है । इसे हिंदी में पूरी तरह से अपनाया गया है । यह वर्णिक छंद है इसमें 3 पदों में 5, 7, 5 वर्ण होते हैं । इस क्षेत्र में भी

डॉ. 'यायावर' जी का अतुलनीय योगदान रहा है। उनका एक हाइकु संग्रह **कांधै पै घर** प्रकाशित है उदाहरण के लिए उनका एक हाइकु दृष्टव्य है-

वे पैंतालीस,
मेकअप में तीस,
बतातीं बीस।

इसके साथ ही सवैया एवं कवित्त संग्रह तथा अन्य आगामी संग्रहों की भी वैचारिक, व्यावहारिक, शिल्प विधानाधारित, संवेगात्मक विवेचना की जाएगी।

तृतीय प्रकरण- डा. 'यायावर' के गीतेतर काव्य का संवेदना संसार

1. **काव्य और संवदेना का अन्तः सम्बन्ध**

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य में, काव्य एवं संवेदना के अंतःसम्बन्धों पर विस्तृत प्रकाश प्रक्षेपित किया जाएगा।

2. डॉ. 'यायावर' के काव्य में संवेदना

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य में, काव्य में संवेदना के विभिन्न पहलुओं का विवेचन किया जाएगा।

3. संवेदना वैविध्य

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य में, काव्य में निम्नांकित विषयों- प्रेम, शृंगार, प्रकृति, राष्ट्रप्रेम, संस्कृति, युगबोध, आध्यात्मिक चेतना, अतीत गौरव, नारी चेतना, मूल्य चेतना एवं मूल्य विघटन एवम् अन्य संवेदनाओं के अंतर्गत संवेदना की अवधारणा, आवश्यक तत्वों एवं इसके स्वरूप को भी स्पष्ट किया जाएगा।

चतुर्थ प्रकरण- काव्य शिल्प और उसका स्वरूप

1. शिल्प- अर्थ और स्वरूप

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य में शिल्प का अर्थ, स्वरूप की समकालीन काव्य साहित्य के दृष्टिकोण से भी अध्ययन किया जाएगा।

2. संवेदना और शिल्प का अन्तःसम्बन्ध

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य में संवेदना और शिल्प के अंतःसम्बन्ध
की विवेचना भी की जाएगी।

३ . शिल्प के तत्व

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य में वर्णित शिल्प विधान की भाषा, छन्द, अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, मिथक व अन्य संदर्भों में विस्तार से अध्ययन किया जाएगा।

पंचम प्रकरण- डा. यायावर के गीतेतर काव्य में भाषा और छन्द

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी के गीतेतर काव्य के विभिन्न छन्दों यथा दोहा, जनक, कुंडलिया, हाइकु, सवैया, कवित्त, मुक्तक/चतुष्पदी का छन्द वैविध्य, सजल का छन्द विधान, हाइकु का छन्द विधान तथा सम्पूर्ण गीतों से इतर काव्य में काव्य की भाषा, उसकी भाषा वैविध्य व आयाम, शब्द संगठन, शब्द शक्तियाँ, लोकोक्तियाँ, मुहावरे व उक्ति वैचित्र्य के आधार पर गहन विश्लेषण किया जाएगा।

षष्ठ प्रकरण- गीतेतर काव्य में शिल्प के अन्य तत्व

षष्ठ प्रकरण के अंतर्गत गीतेतर काव्य में शिल्प के अन्य तत्व यथा अलंकार, बिम्ब विधान, प्रतीक योजना, अप्रस्तुत योजना तथा अन्य तत्वों एवं उनके स्वरूपों को भी स्पष्ट किया जाएगा।

उपसंहार- शोध से प्राप्त निष्कर्ष

उपसंहार-

उपसंहार के अंतर्गत **डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य- संवेदना और शिल्प** शीर्षक के उपर्युक्त वर्णित सभी षष्ठ प्रकरणों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। गीतेतर काव्य की संवेदना और शिल्प के विविध पक्षों को गीतों से इतर काव्य के साथ समाहित कर उसका विस्तृत स्पष्टीकरण किया जाएगा। प्रस्तुत शोध के माध्यम से उनके दोहों में कल्पना की समाहारशक्ति और भाषा की समास शक्ति का विलक्षण समन्वय का प्रदर्शन किया जाएगा। उनकी कुंडलियों के द्वारा परम्परा में रहकर परम्परा को अतिक्रमित करने का साहस, मुक्तक में

व्याप्त वक्रोक्ति का वैभव तथा सजल में कथ्य की गम्भीरता के विभिन्न स्तरों पर प्रयोगों पर शोध किया जाएगा।

चूँकि डॉ. 'यायावर' के गीतों, नवगीतों के समान ही गीतेतर काव्य भी अत्यधिक संपन्न हैं और डॉ. 'यायावर' ने दोहा, जनक छन्द, कुंडलिया जैसे पारम्परिक छन्दों में नवीनतम विषय से नवबोध का प्रतिपादन किया है। वह कभी किन्नर विमर्श पर लिखते हैं तो कभी दलितों की व्यथा पर, कभी नारी जीवन के अनछुए दर्द को अपनी लेखनी से उकेरते हैं तो कभी मनोवैज्ञानिक व दर्शन जैसे अनेक विषयों पर भावों की व्यंजना करते हैं। अतएव गीतों से इतर इन रचनाओं में छिपे एक विशेष युगबोध को जो बहुत ही सहजता के साथ हृदय में उतरता चला जाता है, उस युगबोध को शोध प्रबन्ध में उकेरा जाएगा। यह युग बोध किन-किन स्तरों तक हिन्दी काव्य सरिता को प्रभावित करता है; इसका निष्कर्ष इस शोध अध्ययन के पश्चात ही लगाया जा सकेगा।

अतएव गुरुजनों के समक्ष अपने विषय की शोध रूपरेखा का समापन स्वरचित दोहों से करती हूं:-

श्री यायावर कृति कहे, शिल्पों के संवेग।
सुहासिनी सपना रचे, भावों के आवेग।। 1

गति यति लयता पर कसे, छंद अंग के ढंग।
गीतेतर शुभ काव्य में, छिपे हजारों रंग।। 2

परिशिष्ट

साक्षात्कार- डॉ. यायावर और शोधार्थिनी आमने-सामने

8. सन्दर्भ सूची/आधार ग्रन्थ

क्रमांक	ग्रन्थ	प्रकाशक	प्रकाशक वर्ष
1.	पाँखुरी-पाँखुरी (मुक्तक)	जमुना जल प्रकाशन, मथुरा	2000
2.	सीप में समन्दर (गज़ल)	कलरव प्रकाशन दिल्ली	2000

3. आँसू का अनुवाद (दोहा) अनुसंधान प्रकाशन, बरेली 2008

4. अहिंसा परमोधर्म:(दोहागीत) श्रुत सेवानिधि न्यास, फिरोजाबाद 2008

5. जनकःनये युग जनक (जनक त्रिंशतिका) सुकीर्ति प्रकाशन, कैथल (हरियाणा) 2009

6. काँधे पै घर (हाइकु) उद्योग नगर प्रकाशन, गाजियाबाद 2012

7. रामकथा पात्रामृतम् (दोहा) शिवाँक प्रकाशन, दिल्ली 2013

8. सम्बन्धों की नाव (कुंडलिया) निखिल प्रकाशन, आगरा 2015

9. बाँसुरी बाँसुरी (मुक्तक) निखिल प्रकाशन, आगरा 2017

10. तृषा का आचमन (सजल) जवाहर पुस्तकालय, मथुरा 2017

11. राम नाम अभिराम (दोहा) निखिल प्रकाशन, आगरा 2018

12. श्याम नाम सुखधाम (दोहा) निखिल प्रकाशन, आगरा 2019

13. शाम पढ़े अवसाद (दोहा) निखिल प्रकाशन, आगरा 2020

14. शिवो भूत्वा शिवं यजेत (दोहा) निखिल प्रकाशन, आगरा 2020

15. जलती रेत: दहकता मरूथल (सजल) ऑन लाइन प्रकाशन आगरा 2021

16. अक्षर कालातीत (कुंडलिया) ऑन लाइन प्रकाशन आगरा 2021

17. सनेह ब्रजवानी कौ (सवैया-कवित्त) निखिल प्रकाशन आगरा 2020

18. श्रीमद् भगवद्गीता (दोहानुवाद) निखिल प्रकाशन, आगरा 2018

19. भक्ति विवेकामृतम निखिल प्रकाशन, आगरा 2021

9. सहायक स्त्रोत/सहायक ग्रन्थ

क्रमांक	ग्रन्थ	लेखक	प्रकाशक	प्रकाशक वर्ष
1.	हिन्दी मुक्तक काव्य का विकास	डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक	नागरी प्रचारणी सभा काशी	संवत् 2015 वि.
2.	दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक	डॉ. त्रिभुवन सिंह	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी	मार्च 1967
3.	हिन्दी हाइकु कविता: परम्परा और प्रयोग	डॉ. प्रभा शर्मा	लोकालोक प्रकाशन, गाजियाबाद	1998
4.	हाइकु उद्भव और विकास	डॉ. महावीर सिंह	प्रतिबिम्ब प्रकाशन, रायबरेली	सि. 2008
5.	हिन्दी हाइकु: इतिहास और उपलब्धि	डॉ. रामनारायण पटेल 'राम'	छत्तीसगढ़ लेखकसंघ	2003
6.	हाइकु काव्य विद्या का शास्त्रीय अनुशीलन	नलिनीकान्त	कविताश्री प्रकाशन उत्तर बाजार अंडाल (पं. ब.)	2006
7.	हाइकु काव्य विश्वकोश	सम्पादन डॉ. भगवत शरण अग्रवाल	हाइकु भारती प्रकाशन अहमदाबाद	2009
8.	दोहे-विभिन्न स्वरूप	कृष्ण स्वरूप शर्मा मैथिलेन्द्र	शिवसंकल्प साहित्य परिषद नर्मदापुरम	2009
9.	दोहा-सन्दर्भ 1	कृष्ण स्वरूप शर्मा 'मैथिलेन्द्र'	महेश दिवाकर शिवसंकल्प साहित्य परिषद नर्मदापुरम्	2007

10.	दोहा-सन्दर्भ 2	कृष्ण स्वरूप शर्मा 'मैथिलेन्द्र'	महेश दिवाकर मेकलसुता साहि. समा. संस्थान नर्मदापुरम्	2011
11.	हिन्दी दोहा-सार	वरजोर सिंह 'सरल'	हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी	1987
12.	समकालीन दोहा-कोश	सम्पादक हरेराम 'समीप'	शब्द लोक- दिल्ली	2015
13.	सप्तपदी 6 भाग	सम्पादक देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'	अयन प्रकाशन दिल्ली	2000
14.	काव्य प्रभाकर	जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'	नागरी प्रचारिणी सभा काशी	संवत् 2008
15.	काव्य का स्वरूप	रामानन्द तिवारी 'भारती नंदन'	भारती मन्दिर भरतपुर	1968
16.	काव्य बिम्ब	डॉ नगेन्द्र	नेशनल पब्लिक हाउस, दिल्ली	1967
17.	छन्द प्रभाकर	जगन्नाथ प्रसाद भानु	उत्तर - प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ	2019
18.	छन्द विधान	रामदेव लाल 'विभोर'	प्रतिष्ठा साहित्य एवं सांस्कृतिक संस्थान लखनऊ	2008
19.	काव्यलोक	रामदेव लाल 'विभोर'	नमन प्रकाशन स्टेशन रोड, लखनऊ	2016
20.	जनक छन्द:एक शोधपरक विवेचन	ब्रह्जीत गौतम	अनुराधा प्रकाशन जनकपुरी, दिल्ली	2006
21.	जनक छन्द-	डॉ. कृष्णपाल	एकता प्रकाशन,	2010

	आन्दोलन	गौतम	दिल्ली-58	
22.	जनक छन्द यों बढ़ रहा	सम्पा. ओमप्रकाश भाटिया 'अराज'	अनुराधा प्रकाशन दिल्ली	2006
23.	जनक नागरी: भारतीय आवश्यकता	डॉ. ओमप्रकाश भाटिया 'अराज'	अनुराधा प्रकाशन दिल्ली	2006
24.	भाषा और संवेदना	डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी	भारतीय ज्ञानपीठ	1964
25.	मिथक और आधुनिक हिन्दी कविता	डॉ. शम्भुनाथ	नेशनल पब्लिक हाउस दिल्ली	1965
26.	सजल का संवेदना संसार	सम्पादन डॉ. 'यायावर'	निखिल प्रकाशन	2022
27.	साहित्य	शंकरदेव अवतरे	बनारस हिन्दी विश्वविधालय	1957
28.	मानव मूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोष 5 भाग	सम्पादक धर्मपाल मौनी	सरूप एंड सन्स दिल्ली	2006
29.	भारतीय साहित्यशास्त्र कोश	डॉ. राजवंश सहाय 'हीरा'	बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना	1973
30.	साहित्यकार सन्दर्भ कोश भाग - 2	सम्पादक डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल	हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर	2006
31.	सरस्वती विशेषांक (मासिक)	दोहा विशेषांक	देहरादून	(जुलाई-सितम्बर 2010)

32.	हिन्दी मुक्तक काव्य-परंपरा और समकालीन लघुकाव्य विधायें : कथ्य व शिल्प		आगरा	2012
33.	कुंडलिया के सात हस्ताक्षर	संपादक त्रिलोक सिंह ठकुरेला	राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर	2012
34.	कुंडलिया कानन	संपादक त्रिलोक सिंह ठकुरेला	राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर	2014
35.	देश के प्रतिनिधि सजलकार	संपादक विजय राठौर	राजश्री पब्लिकेशन कासगंज	2018
36.	सदी के प्रथम दशक का हिन्दी हाइकु काव्य	संपादक डॉ. मिथिलेश दीक्षित	समन्वय प्रकाशन गाजियाबाद	2011
37.	शैली विज्ञान और आलोचना की नई भूमिका	रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव	केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा	

टिप्पणी :- उपर्युक्त के अतिरिक्त लगभग 60 समवेत सम्पादित काव्य संग्रहों तथा सैकड़ों पत्रिकाओं में भी डॉ. 'यायावर' का गीतेतर काव्य बिखरा हुआ है। वह भी आधार सामग्री का कार्य करेगा।

सपना दत्ता
शोधार्थी हिन्दी
कला एवम् मानविकी महाविद्यालय
आईआईएमटी विश्वविद्यालय मेरठ
उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय

ज्ञान बढ़े गुरु की कृपा , लिखूँ सत्य धर माथ ।
माथ नम्रता मन बसे , शील मधुरता साथ ।।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व या उपयोगिता काप्रारम्भ मैं उपरोक्त स्वरचित **सिंहावलोकनी दोहे** के साथ गुरुजनों को नमन करते हुए करती हूँ, इस बात की शुरुआत के साथ कि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य के संवेदना और शिल्पको ही शोध का विषय क्यों चुना गया? प्रारंभ करती हूं वर्ष 2017 से जब इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,(इग्नू) रोहिणी,दिल्लीमें विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के आयोजक थे **पद्म श्रीडॉ. श्याम सिंह 'शशि' जी** तथा कार्यक्रम संचालन का भार मेरे कंधों पर था और उस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे आदरणीय डॉ.रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी।यह मेरा सौभाग्य था कि आज उनसे प्रथम बार मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था।अभी तक उनके नवगीतों, दोहों, मुक्तकों को पढ़ा भर था। उसके पश्चात नियति ने अनेकों बार अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों में आदरणीय 'यायावर' जी से मिलने का सौभाग्य प्रदान किया। काव्य के क्षेत्र में रामनाथ साहू 'ननकी' जी मेरे प्रथम काव्य गुरु हैं, तो डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी मेरी काव्य की पराकाष्ठा का आधार हैं। डॉ.'यायावर' जी का कृतित्व व व्यक्तित्व दोनों ही मधु के समान अत्यंत सरल एवं सहज हैं, जिसको जिह्वा पर रखते ही रस, गुण और गन्ध तीनों की अनुभूति एक साथ रसोगुणानन्द से भी ऊपर जाकर ब्रह्मानन्द की अनुभूति करवाती है। इनके व्यक्तित्व का परिचय ही इनके वृहद विस्तारित कृतित्व का परिचय करवाता है। अनेकानेक उपलब्धियाँइनके नाम संग्रहित हैं। जिसका अति सूक्ष्म परिचय इस प्रकार है।

साहित्य के क्षेत्र में इनका योगदान

1. लगभग 40 से अधिक साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

2. सम्पादित कृतियों की संख्या 12 से अधिक है।

3. 120 स्तरीय कृतियों में लेखन सहभागिता की है।

4. 13 से अधिक विशिष्ट उपलब्धियाँ आपके नाम संग्रहित हैं।

5. अनेकानेक मानद उपाधियाँ पुरस्कार सम्मान जिनमें साहित्य भूषण वर्ष 2018 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा, साहित्य वाचस्पति, गीत गंधर्व, काव्य महारथी,सनातन गौरव, भारती सेवा भूषण, काव्य श्री,काव्य गौरव, साहित्य श्री आदि सम्मानों की संख्या 52 से भी अधिक है।

इसके साथ ही आप काव्य जगत में नवगीतकार के रूप में विख्यात हैं परन्तु इस बात को भी पूर्णतया नकारा नहीं जा सकता कि नवगीत के परे भी साहित्य के क्षेत्र में आपकी एक वृहद् दुनिया है वह दुनिया है गीतों से इतर काव्य की जिसमें बहुत सारे रंगों के पुष्प विविध प्रजातियों के साथ काव्य वाटिका में पुष्पित व गन्धायमान होते हैं और संपूर्ण काव्य वाटिका पल प्रतिपल सुहासित ही रहती है। चाहे वह सवैया छन्द हो या फिर दोहा कुंडलिया जैसे पारम्परिक छन्द। विशेष बात यह है कि पारम्परिकछन्दों में भी नवीन प्रयोग आपकी रचनाओं में परिलक्षित होते हैं यथा- दोहे तथा कुंडलियों का सृजन मूलतः नीति, आदर्श, धार्मिक तथा अध्यात्मिक भाव के लिए प्रयोग किया जाता है परन्तु यहाँ पर परम्परागतछन्दों को नवीन कलेवर में प्रस्तुत किया गया है यह नवीन कलेवर है समाजिकता का, समाजिक विरूपता का, राष्ट्र का, राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं का यथा -

व्यथा कथा हर रोज यह, पढ़ता है परिवार।
छत से ऊँची हो गई, आँगन की दीवार।।

प्रथमतया वर्णित 15 गुरु व 8 लघु से सुसज्जित **नर दोहा** में जहाँ राष्ट्र की व्यथा कथा को अखबारों के माध्यम से प्रतिदिन पढ़ा जाता है तथा आँगन की दीवार का छत से भी ऊँचा हो जाना मात्र अतिशयोक्ति अलंकार को

ही प्रतिपादित नहीं करता वरन् कवि हृदय का विह्वल होकर राष्ट्र की एकता अखंडता और संप्रभुता के प्रति संवेदनशीलता को भी साक्षात् प्रकट करता है।

अंतर तम में बस गया, सन्नाटे का शोर।
केवल चित्रों में दिखे, आज नाचता मोर।।

उपरोक्त वर्णित 17 गुरु व 14 लघु मात्राओं से सजा हुआ **मर्कट दोहा** में अन्तस के अन्धकार में सन्नाटे के शोर का विलीन होना, कवि हृदय के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष के जन-गण के मन के भावों को बताता है, जहाँ कविवर राष्ट्रीय पक्षी मोर रूपी राष्ट्रीयता की पावन भावना को केवल कागजों तक ही सीमित बताकर राष्ट्र को जागृत करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं वहीं भारतवर्ष के गौरवशाली इतिहास के वर्णन से भी राष्ट्रप्रेम को जगाने का कोई भी प्रयास छोड़ा नहीं जाता। कभी वीर शिवाजी महाराज तो कभी स्वामी विवेकानंद जी के गौरवशाली जीवनियों को काव्य में सजा कर प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय

ज्ञान बढ़े गुरु की कृपा , लिखूँ सत्य धर माथ ।
माथ नम्रता मन बसे , शील मधुरता साथ ।।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व या उपयोगिता काप्रारम्भ मैं उपरोक्त स्वरचित **सिंहावलोकनी दोहे** के साथ गुरुजनों को नमन करते हुए करती हूँ, इस बात की शुरुआत के साथ कि डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीतेतर काव्य के संवेदना और शिल्पको ही शोध का विषय क्यों चुना गया? प्रारंभ करती हूं वर्ष 2017 से जब इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,(इग्नू) रोहिणी,दिल्लीमें विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के आयोजक थे **पद्म श्रीडॉ. श्याम सिंह 'शशि' जी** तथा कार्यक्रम संचालन का भार मेरे कंधों पर था और उस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे आदरणीय डॉ.रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी।यह मेरा सौभाग्य था कि आज उनसे प्रथम बार मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था।अभी तक उनके नवगीतों, दोहों, मुक्तकों को पढ़ा भर था। उसके पश्चात नियति ने अनेकों बार अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों में आदरणीय 'यायावर' जी से मिलने का सौभाग्य प्रदान किया। काव्य के क्षेत्र में रामनाथ साहू 'ननकी' जी मेरे प्रथम काव्य गुरु हैं, तो डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' जी मेरी काव्य की पराकाष्ठा का आधार हैं। डॉ.'यायावर' जी का कृतित्व व व्यक्तित्व दोनों ही मधु के समान अत्यंत सरल एवं सहज हैं, जिसको जिह्वा पर रखते ही रस, गुण और गन्ध तीनों की अनुभूति एक साथ रसोगुणानन्द से भी ऊपर जाकर ब्रह्मानन्द की अनुभूति करवाती है। इनके व्यक्तित्व का परिचय ही इनके वृहद विस्तारित कृतित्व का परिचय करवाता है। अनेकानेक उपलब्धियाँइनके नाम संग्रहित हैं। जिसका अति सूक्ष्म परिचय इस प्रकार है।

साहित्य के क्षेत्र में इनका योगदान

1. लगभग 40 से अधिक साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

2. सम्पादित कृतियों की संख्या 12 से अधिक है।

3. 120 स्तरीय कृतियों में लेखन सहभागिता की है।

4. 13 से अधिक विशिष्ट उपलब्धियाँ आपके नाम संग्रहित हैं।

5. अनेकानेक मानद उपाधियाँ पुरस्कार सम्मान जिनमें साहित्य भूषण वर्ष 2018 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा, साहित्य वाचस्पति, गीत गंधर्व, काव्य महारथी,सनातन गौरव, भारती सेवा भूषण, काव्य श्री,काव्य गौरव, साहित्य श्री आदि सम्मानों की संख्या 52 से भी अधिक है।

इसके साथ ही आप काव्य जगत में नवगीतकार के रूप में विख्यात हैं परन्तु इस बात को भी पूर्णतया नकारा नहीं जा सकता कि नवगीत के परे भी साहित्य के क्षेत्र में आपकी एक वृहद् दुनिया है वह दुनिया है गीतों से इतर काव्य की जिसमें बहुत सारे रंगों के पुष्प विविध प्रजातियों के साथ काव्य वाटिका में पुष्पित व गन्धायमान होते हैं और संपूर्ण काव्य वाटिका पल प्रतिपल सुहासित ही रहती है। चाहे वह सवैया छन्द हो या फिर दोहा कुंडलिया जैसे पारम्परिक छन्द। विशेष बात यह है कि पारम्परिकछन्दों में भी नवीन प्रयोग आपकी रचनाओं में परिलक्षित होते हैं यथा- दोहे तथा कुंडलियों का सृजन मूलतः नीति, आदर्श, धार्मिक तथा अध्यात्मिक भाव के लिए प्रयोग किया जाता है परन्तु यहाँ पर परम्परागतछन्दों को नवीन कलेवर में प्रस्तुत किया गया है यह नवीन कलेवर है समाजिकता का, समाजिक विरूपता का, राष्ट्र का, राष्ट्र के विभिन्न पहलुओं का यथा -

व्यथा कथा हर रोज यह, पढ़ता है परिवार।
छत से ऊँची हो गई, आँगन की दीवार।।

प्रथमतया वर्णित 15 गुरु व 8 लघु से सुसज्जित **नर दोहा** में जहाँ राष्ट्र की व्यथा कथा को अखबारों के माध्यम से प्रतिदिन पढ़ा जाता है तथा आँगन की दीवार का छत से भी ऊँचा हो जाना मात्र अतिशयोक्ति अलंकार को ही प्रतिपादित नहीं करता वरन् कवि हृदय का विह्वल होकर राष्ट्र की एकता अखंडता और संप्रभुता के प्रति संवेदनशीलता को भी साक्षात् प्रकट करता है।

अंतर तम में बस गया, सन्नाटे का शोर।
केवल चित्रों में दिखे, आज नाचता मोर।।

उपरोक्त वर्णित 17 गुरु व 14 लघु मात्राओं से सजा हुआ **मर्कट दोहा** में अन्तस के अन्धकार में सन्नाटे के शोर का विलीन होना, कवि हृदय के रूप में सम्पूर्ण भारतवर्ष के जन-गण के मन के भावों को बताता है, जहाँ कविवर राष्ट्रीय पक्षी मोर रूपी राष्ट्रीयता की पावन भावना को केवल कागजों तक ही सीमित बताकर राष्ट्र को जागृत करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं वहीं भारतवर्ष के गौरवशाली इतिहास के वर्णन से भी राष्ट्रप्रेम को जगाने का कोई भी प्रयास छोड़ा नहीं जाता। कभी वीर शिवाजी महाराज तो कभी स्वामी विवेकानंद जी के गौरवशाली जीवनियों को काव्य में सजा कर प्रस्तुत किया गया है।